# पाताल भुवनेश्वर

## रहस्यमय पाताल लोक की दुनिया

प्रकृति के जितने करीब जाओ, उतना ही वह नए रूप में हमारे सामने आती है। बात उतराखंड की हो, तो इस देवभूमि में अनेक रहस्यमय स्थान है, जिनके दर्शन आपको मंत्रमुग्ध कर देंगे। ऐसा ही एक स्थान कुमाऊं मंडल के पिथौरागढ़ जनपद में गंगोलीहाट कस्बे के समीप भुवनेश्वर गांव में है। यह है पाताल भुवनेश्वर गुफा। प्रकृति का एक अनबूझ रहस्य, जिसके लोक में पहुंचकर युगों-युगों का इतिहास एक साथ प्रकट हो जाता है। गुफा के भीतर लगभग उबड़-खाबड़, टेढे-मेढ़े पत्थरों पर पैर टिकाकर 84 सीढ़ियों से होकर गुजरते हुए आप पाताल लोक मे पहुंच जाते हैं। अंदर की अद्भुत दुनिया रोमांचित कर देती है। छोटी बड़ी विभिन्न देवी-देवताओं व पशु पक्षियों के आकार की शिलाएं। एक ऐसा रचना संसार, जिसकी बाहर रहते आपने कभी कल्पना भी नहीं कि होगी। धरती के भीतर बड़ी गुफा, जो कई भागों में बंट जाती है। बीच में मैदानी हिस्से भी फैले हुए हैं। गुफा के रास्ते के दोनों ओर जंजीर लगाई गई है, जिसे पकड़कर यात्री आते-जाते हैं। गुफा में जाने के लिए फीस भी रखी गई है।

दीपक नौगाई
लेखक, हल्द्वानी

### भारतीय पुरातत्व विभाग के अधीन

स्कंद पुराण के 103 वें अध्याय में पाताल भुवनेश्वर गुफा का वर्णन है, जिसमें व्यास जी ने कहा है कि मैं एक ऐसी जगह का वर्णन करता हूं, जिसके पूजन करने के संबंध में तो कहना ही क्या, जिसका स्मरण और स्पर्श मात्र करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। वह सरयू रामगंगा के मध्य पाताल भुवनेश्वर है। वर्ष 2007 से यह गुफा भारतीय पुरातत्व विभाग के अधीन है। भुवनेश्वर गांव निवासी स्वर्गीय मेजर समीर कोतवाल की स्मृति में गांव से गुफा की ओर जाने वाले मार्ग में बने प्रवेश द्वार को 'समीर द्वार' नाम दिया गया है। मेजर समीर 28 अगस्त 1999 को असम में उग्रवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे। द्वार के बगल में मेजर की प्रस्तर प्रतिमा भी स्थापित है।

### पौराणिक महत्व

कहते हैं कि इस अद्भुत गुफा के दर्शन त्रेतायुग में अयोध्या के राजा ऋतुपूर्ण ने पहली बार किया था। राजा चौपड़ खेलने के बहुत शौकीन थे। उनके मित्र राजा नल भी इस खेल के महारथी थे। पर एक बार वे इस खेल में अपनी पत्नी दमयंती को हार गए। राजा नल इस हार से बहुत शर्मिंदा हुए। वे राजा ऋतुपुर्ण को साथ लेकर हिमालय की यात्रा पर निकल पड़े। एक दिन घने जंगल में उन्हें असाधारण हिरण दिखा। राजा नल ने कहा इस हिरण को जिंदा पकड़ना है। दोनों उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे लग गए। हिरण का पीछा करते हुए वे भुवनेश्वर गांव जा पहुंचे। शाम हो गई और हिरण भी कही दिखलाई नहीं दिया। राजा रास्ता भटक गए। रात में उन्हें स्वप्न हुआ और आवाज सुनाई दी- 'तुम क्षेत्रपाल देवता की तपस्या करो, वही तुम्हें रास्ता बताएंगे।' राजा तपस्या करने लगे। कुछ दिनों बाद क्षेत्रपाल ने दर्शन दिए और कहा कि इस स्थान पर एक बड़ी सुरंग है, जहां कई गुफाएं हैं और जहां कण-कण में भगवान शिव निवास करते हैं। क्षेत्रपाल ने राजा को इस दिव्य लोक में पहुंचा दिया।

### गुफा में चौपड़ की आकृति

यह भी माना जाता है कि अपने अज्ञातवास में पांडव भी यहां आए थे। उन्होंने कुछ समय इस गुफा में वास किया था। गुफा के भीतर चौपड़ की आकृति भी बनी हुई है। 822 ई. में अपनी दिग्विजय यात्रा के दौरान आदि गुरु शंकराचार्य भी यहां आए। उन्होंने गुफा के अंदर एक जगह पर तांबे का शिवलिंग स्थापित किया। गुफा में जाने वाले श्रृद्धालु इस शिवलिंग की पूजा अर्चना करते हैं। भुवनेश्वर गांव से कुछ ही दूर देवदार के घने वन के मध्य स्थित है- पाताल भुवनेश्वर गुफा। गुफा का प्रवेश द्वार लगभग चार फिट लंबा और डेढ फिट चौड़ा है। अत्यंत संकरी, फिसलनदार गुफा में टेढे-मेढ़े पत्थरों की सीढ़ी पर सावधानी से साकंल पकड़कर तीस फिट नीचे उतरना पडता है। एक बार में एक ही व्यक्ति उतर पाता है। उतरते ही नीचे एक बड़े मैदान मे आप खुद को पाते हैं, जहां से तीन ओर को लंबी-लंबी सुरंगें चली जाती हैं। धरती के भीतर एक अनोखी दुनिया, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। यहां चट्टानों मे प्राकृतिक कलाकृतियां हैं, जिन्हें पौराणिक कथाओं व मिथकों से जोड़ा गया है।

गाइड बताता है कि आप शेषनाग के शरीर की हड्डियों पर चल रहे हैं और आपके सिर के ऊपर शेषनाग का बना है। सुनते ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। गहराई से देखेंगे तो आप वास्तव में महसूस करेंगे कि कुदरत द्वारा तराशे पत्थरों मे नाग बन फैलाए है। फन के दाएं तरफ ऐरावत हाथी विराजमान हैं। जमीन मे बिल्कुल झुककर भूमि से चंद इंच की दूरी पर चट्टानों में हाथी के तराशे हुए पैरों को देखकर आपको मानना ही पड़ेगा कि आप जो सुन रहे हैं वो सच है।

### रोमांचक दृश्य

गुफा में कुछ आगे बढ़ें, तो आप उस जगह पहुंच जाते हैं, जिसके विषय में कहा जाता है कि शिवजी ने गणेश जी का कटा हुआ मस्तक यहीं पर रखा था। गणेशजी के कटे मस्तक शिलारूपी प्रतीक के ठीक ऊपर 108 पंखुड़ियों वाला शवाष्टक दल ब्रहमकमल सुशोभित है। इस ब्रह्मकमल से पानी की बूंदे गणेश जी के मस्तक पर टपकती हैं। मुख्य बूंद आदिगणेश के मुख में गिरती हुई दिखाई देती है। जनमेजय के नाग यज्ञ का हवन कुंड भी गुफा के भीतर है। कहा जाता है कि अपने पिता राजा परीक्षित को श्राप मुक्त करने के लिए जनमेजय ने सारे नाग मारकर हवन कुंड में जला दिए थे, लेकिन तक्षत नामक नाग बच निकला था, जिसने बाद में बदला लेते हुए परीक्षित को डसकर मौत के घाट उतार दिया था। नाग यज्ञ कुंड के ऊपर शिला पर इस नाग का चित्र उभरा हुआ देख सकते हैं।

एक जगह गुफा की छत पर गाय के थन की आकृति नजर आती है। यह कामधेनु गाय का स्तन है। आगे बढ़े तो एक मुड़ी गर्दन वाला गरुड़ एक कुंड के ऊपर बैठा दिखाई देता है। लोकश्रुति है कि शिवजी ने इस कुंड को अपने नागों के पानी पीने के लिए बनाया था। इसकी देखरेख गरुड़ के हाथ में थी, लेकिन जब गरुड़ ने ही इस कुंड से पानी पीने की कोशिश की तो शिवजी ने गुस्से में उसकी गर्दन मोड़ दी और उसे श्राप देकर जड़वत बना दिया।

गुफा में एक स्थान पर शिवजी का मनोकामना कुंड भी है। मान्यता है कि इसके बीच बने छेद से धातु की कोई चीज पार करने पर मनोकामना पूर्ण होती है। उसके साथ कमली बिछी है और उसके नीचे बाघंबर बिछा है। वहीं पर पाताल भैरवी भी है, जो मुंडमाला पहने खड़ी हैं। मान्यता चाहे कुछ भी हो पर एकबारगी गुफा में बनी आकृतियों को देख लेने के बाद उनसे जुड़ी कथाओं पर भरोसा किए बिना नहीं रहा जाता। आश्चर्य यह है कि जमीन के इतने अंदर होने के बावजूद यहां घुटन महसूस नहीं होती अपितु शांति का अनुभव होता है। दूर-दूर से सैलानी इस अद्भुत गुफा को देखने आते हैं। कुछ श्रृद्धा से, कुछ रोमांच के अनुभव के लिए तो कुछ शांति की तलाश में।

## लव बर्ड्स

# जीत जाएंगे हम तू अगर संग है

कहते हैं कि प्यार की शुरुआत अक्सर सबसे आम पलों में छुपी होती है, लेकिन उसकी गहराई और असर वक्त के साथ हमारे जीवन को बदल देता है। हमारी पहली मुलाकात किसी रोमांटिक जगह पर नहीं, बल्कि एक बहुत साधारण-सी सुबह बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी के गेट पर हुई थी। शैफाली अपनी क्लास के लिए भाग रही थी और मैं (शिव) अपने बीटेक की डिग्री लेने यूनिवर्सिटी पहुंचा था। अचानक भीड़ में शैफाली का बैग थोड़ा उलझा और वह लड़खड़ा गई। मैंने तुरंत हाथ बढ़ाकर उसे संभाल लिया। "आप ठीक हैं?" मैंने पूछा। शैफाली ने हल्की-सी शर्मीली मुस्कान के साथ कहा, "हां, बस दिन की शुरुआत थोड़ी नाटकीय हो गई।" हम दोनों अलग हो गए, पर उस एक पल ने दोनों के दिमाग में एक छोटी-सी जगह बना ली। अगले ही हफ्ते, किस्मत ने फिर करवट ली। शैफाली अपने कॉलेज की तरफ से साइंस प्रोजेक्ट की एक प्रदर्शनी में आई थी और मैं वहां पर एक जज पैनल के रूप में आया था। मैंने उसे देखा और मुस्कुरा दिया। "फिर मिल ही गए," उसने कहा। "लगता है शहर छोटा है या किस्मत बड़ी," शैफाली ने चुटकी ली।

इस बार बातचीत लंबी चली। कला, काम, सपने, यात्राएं दोनों को पता ही नहीं चला कि कब दो अजनबी अपनी दुनिया एक-दूसरे के सामने खोलने लगे। मैं दिल्ली वापस लौट आया, परंतु फोन पर लंबी बातें चलने लगी धीरे-धीरे हम एक-दूसरे की दुनिया में सहज होने लगे। मुलाकातें तो कम होती थीं, परंतु शैफाली का केयरिंग नेचर, मुस्कान और सादापन मुझे उसकी तरफ खींचने लग गया। मैंने शैफाली को आजादी, सपने देखना और खुद पर भरोसा करना सिखाया। कई सालों की फोन पर बात और छोटी-छोटी मुलाकातों के बाद हमने तय किया कि यह कहानी सिर्फ 'मुलाकात' तक सीमित नहीं रहेगी, यह रिश्ता अब साझेदारी, विश्वास और प्यार की नई शुरुआत बनेगी।

प्यार तो हो गया परंतु करियर की उठापटक के बीच मैंने तय नहीं कर पा रहा था कि इसको आगे कैसे मुकाम दिया जाए? एक तरफ करियर को संवारने का समय था और उसी बीच मैं विदेश शिफ्ट हो गया। कभी-कभी तो ऐसा भी लगा की अब ये दूरी इस रिश्ते को यहीं पर ही न रोक दें। अब फोन पर बातें करना बहुत महंगा था, परंतु शैफाली अपने समर्पण के प्रति अपनी ट्यूशन और डांस क्लासेज से कमाए सारे पैसे सिर्फ मुझसे बात करने में खर्च कर देती। बातें कम हो रही थीं मिलना तो बिल्कुल मुश्किल था। विदेश में रहते हुए अकेलेपन में शैफाली की फोन कॉल मुझे लिए रामबाण का काम करती। विदेश की चकाचौंध भी मुझे शैफाली के समर्पण और प्यार से अलग न कर पाई। जब ये प्रेम कहानी शादी की बात तक पहुंची, तो जिंदगी एक नए प्रश्नपत्र के साथ उनके सामने खड़ी थी। घरवालों के सवाल, दोनों परिवारों के विचारों और हैसियत में जमीन आसमान का फर्क और समाज के करोड़ों प्रश्न दोनों के सामने मुंह फैलाए खड़े थे। घरवालों की तरफ से पहले तो पूर्ण मना था, परंतु दोनों ने हार नहीं मानी। दोनों अपनी सीमाओं में रहते हुए अपने-अपने घरवालों को मनाने का पूर्ण प्रयास हर पल करते रहे। ये समय ऐसे गुजर रहा था कि मुझे तो आईएएस बनने की परीक्षा जैसा लग रहा था, परंतु शैफाली बहुत धैर्यवान थी। वो अपने फैसले पर अडिग थी। पूरे दो साल बीत गए तब जाकर घर वाले माने। फिर समाज के लोगों ने भी अड़ंगे लगाए और ये प्रेम की नाव भारी तूफान में हिचकोले लगाते-लगाते किनारे तक आ ही गई, फिर वो घड़ी आई, जिसका हम दोनों को लंबे समय से प्रतीक्षा थी। इस बीच पिछले दो सालों में हम दोनों कभी मिले नहीं, क्योंकि दूरियां लंबी थीं, परंतु दोनों के प्रेम ने ये जंग जीत ली। जब विवाह मंडप पर दोनों ने एक-दूसरे को देखा, तो दोनों की आंखों में सालों की प्रतीक्षा, परिवार और समाज से विजय की चमक और चेहरे पर एक संतोषप्रद मुस्कान थी। उन्हें लगा की अब अंतिम मंजिल पर पहुंच गए, जो एक अगली लंबी यात्रा पर साथ चलने के लिए आगे ले जाएगी। आज भी सालों बाद जब दोनों उस समय को याद करते हैं, तो चेहरे पर एक मुस्कान के साथ ये पंक्तियां बरबस ही मुंह से निकल जाती हैं "जीत जाएंगे हम, तू अगर संग है।" ये पंक्तियां आज भी, उन्हें जीवन के विभिन्न मोड़ों पर आती हुई परीक्षाओं में हौसला देती है। हमारी प्रेम कहानी इस बात को सिद्ध करती है कि यदि प्रेम सच्चा हो और हृदय में धैर्य और एक-दूसरे पर विश्वास हो, तो चाहें कितनी भी बाधाएं आएं आप मंजिल पर पहुंचते अवश्य हैं। कभी-कभार शैफाली बोलती है "हम सच में यहां तक आ गए विश्वास नहीं होता।" मैं हर बार उसका हाथ थाम कर कहता है "जब साथी सही हो और दोनों साथ चलें, तो सफर अपने आप सुंदर हो जाता है।"

-शिवमोहन और शैफाली, कानपुर

## जॉब का पहला दिन

# शुरू हुआ जीवन का एक नया अध्याय

जीवन के कतिपय अनुभव ऐसी मधुर स्मृतियों में परिणत हो जाते हैं, जो आगे चलकर हमारे व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और पेशेवर पहचान को गहराई से प्रभावित करती हैं। वर्षों के सतत अध्ययन, तैयारी, लंबी प्रतीक्षा और कठिन संघर्ष के बाद जब किसी प्रतिष्ठित महाविद्यालय में नियुक्ति मिलती है, तो मन में एक साथ कई भावनाएं उमड़ती हैं। उत्साह, संकोच, जिम्मेदारी और भविष्य को लेकर एक अनोखी सी आशा आपको चहुंओर से घेर लेती हैं। शाहजहांपुर के एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय में मेरा पहला दिन भी बिल्कुल ऐसा ही था। भावनाओं का सुंदर संगम, नए माहौल का स्पर्श और सीखने के असीमित अवसरों का आरंभ।

यद्यपि सुबह से ही मन में हल्की-सी घबराहट थी, किंतु उस घबराहट पर मेरी उत्सुकता भारी पड़ रही थी। मैंने अलमारी से सलीकेदार औपचारिक पोशाक चुनी, आईने में एक नजर खुद को देखा और मन ही मन कहा, "आज से जीवन का एक नया अध्याय शुरू हो रहा है।"

महाविद्यालय पहुंचने तक मन में कई सवाल थे- कैसा वातावरण होगा? सहकर्मी कैसे होंगे? विद्यार्थी कैसा व्यवहार करेंगे? और सबसे महत्वपूर्ण यह कि क्या मैं अपनी भूमिका को उतनी ही कुशलता से निभा पाऊंगा, जितनी अपेक्षा संस्था मुझसे करती है? इन सब चिंताओं के बावजूद मेरे भीतर एक सकारात्मक ऊर्जा थी, जो कदमों को आगे बढ़ाते हुए आश्वस्त कर रही थी कि सब कुछ अच्छा होगा।

महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर कदम रखते ही परिसर की साफ-सुथरी हरियाली, बेमिसाल स्वच्छता, भवनों की सादगीपूर्ण भव्यता और विद्यार्थियों की हलचल ने मेरे मन में एक अद्भुत रोमांच एवं आत्मीयता का भाव जगा दिया। ऐसा लग रहा था मानो यह जगह मेरे इंतजार में ही थी। कुछ छात्र बड़ी विनम्रता से मुस्कुराकर मेरा अभिवादन कर चुके थे। यह छोटा-सा व्यवहार मेरे भीतर के तनाव को थोड़ा कम कर गया। प्रशासनिक भवन के अंदर स्टाफ रूम तक पहुंचने पर वहां पहले से उपस्थित शिक्षकों ने बड़े स्नेह से मेरा स्वागत किया। खास बात तो यह थी कि मेरे विभाग में उस समय कोई शिक्षक कार्यरत नहीं था, लिहाजा मुझे नियुक्ति के साथ ही विभाग का विभागाध्यक्ष बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। साथी शिक्षकों से परिचय भी एक आत्मीय संवाद की तरह था। हर कोई अपने अनुभव साझा करने को उत्सुक और मुझे सहज महसूस कराने को तत्पर। वातावरण में न तो औपचारिकता का बोझ था और न ही प्रतिस्पर्धा की कठोरता, था तो बस एक सहयोगी भाव, जो किसी भी नए व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत होता है।

फिर आया वह क्षण, जिसका सबसे अधिक इंतजार था- पहली कक्षा लेने का। हाथ में चाक और उपस्थिति रजिस्टर लिए जब मैं कक्षा में पहुंचा, तो लगभग अस्सी छात्रों की निगाहें मेरी ओर उठीं। यह क्षण अत्यंत भावुक और चुनौतीपूर्ण था। उनके लिए मैं एक नया शिक्षक था और मेरे लिए वे भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारी। मैंने मुस्कुराते हुए अभिवादन किया और छात्रों की आंखों में सम्मान के साथ-साथ उत्सुकता की चमक महसूस की। मैंने अपना संक्षिप्त परिचय दिया और उनसे भी अपने बारे में बताने को कहा। विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएं सुनकर यह समझ आ गया कि कक्षा में विविध पृष्ठभूमि, अलग-अलग विचार और सीखने की भिन्न गति वाले छात्र मौजूद हैं और इन्हीं के बीच मैं आने वाले दिनों में अपनी शिक्षण-यात्रा को आकार दूंगा।

व्याख्यान के दौरान छात्रों की उत्सुकता, प्रश्न पूछने की सहजता और ध्यान से सुनने का स्वभाव देखकर मन का सारा तनाव समाप्त हो गया। यह अनुभव किसी औपचारिक पाठ्य प्रस्तुति जैसा नहीं, बल्कि एक संवाद जैसा था, जहां ज्ञान का आदान-प्रदान दोनों तरफ से हो रहा था। कक्षा के अंत में जब छात्रों ने तालियों के साथ मेरा स्वागत किया, तो हृदय गर्व और कृतज्ञता से भर उठा। यही वह पल था, जिसने मुझे एहसास दिलाया कि शिक्षक की भूमिका केवल विषय पढ़ाने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह छात्रों के जीवन में प्रेरणा, मार्गदर्शन और सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत भी बनती है।

पहली कक्षा के बाद विभाग में लौटते हुए कई शिक्षकों ने उत्सुकता से पूछा- 'पहले दिन का अनुभव कैसा रहा?' उनकी आत्मीयता ने दिन को और भी सुखद बना दिया। चाय की गरमा-गरम चुस्की के साथ जब हम शिक्षण-प्रक्रिया, विभागीय गतिविधियों और छात्रों की संभावनाओं पर बातचीत कर रहे थे, तब महसूस हुआ कि यह महाविद्यालय केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक जीवंत परिवार है, जिसे ज्ञान, सहयोग और सामूहिक प्रयत्नों ने एक सूत्र में बांध रखा है। दोपहर में मुझे प्राचार्य महोदय के साथ बैठक में शामिल होने का अवसर मिला। वहां वार्षिक गतिविधियों की रूपरेखा, अनुसंधान परियोजनाएं, छात्रों के अतिरिक्त विकास की योजनाएँ तथा नई शिक्षण तकनीकों पर चर्चा के साथ ही साथ मुझे कई नई जिम्मेदारियां सौंपी गईं। यह देखकर मन अति प्रसन्न हुआ कि संस्था केवल औपचारिक शिक्षण तक सीमित नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति सजग और प्रतिबद्ध है। इस बैठक में मेरा सुझाव भी सुना गया, जिससे मेरा आत्मविश्वास और बढ़ गया।

दिन के अंत में जब मैं परिसर से बाहर निकला, तब पूरे दिन की स्मृतियां मेरे मन में चलचित्र की तरह चल रही थीं। महाविद्यालय का वह पहला दिन आज भी स्मृतियों में उज्जवल है और हमेशा रहेगा, एक प्रेरणा की तरह, एक विश्वास की तरह और एक नए आरंभ की तरह।

– शिशिर शुक्ला, शाहजहांपुर